नीरव संध्या का शहर

शेफाली जैन

नीरव संध्या का शहर कोनो फुमियो द्वारा लिखी और चित्रित की हुई माँगा है। यह हिरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बम के दीर्घकालीन असर की कहानी है। जापानी कॉमिक्स को माँगा कहते हैं। कॉमिक्स चित्रकथाएँ होती हैं जिन्हें सिलसिलेवार पैनल्स की सहायता से बनाया जाता है। जापानी माँगा और दूसरी कॉमिक्स के बीच एक बड़ा फर्क है। माँगा पैनल्स को दाईं से बाईं तरफ पढ़ा जाता है, जबकि दूसरी सब कॉमिक्स को हम बाईं से दाईं तरफ पढ़ते हैं। इसलिए अगर तुम कोनो फुमियो की यह कॉमिक्स पढ़ोगे तो इस कॉमिक्स को अन्तिम पन्ने से पढ़ना शुरू करना होगा। क्योंकि यह उसका पहला पन्ना होगा। यह किताब कई भाषाओं में उपलब्ध है।

जब भी मैं यह कहानी पढ़ती हूँ, तो मुझे रोना आ जाता है। साथ ही मुझे युद्ध के खिलाफ आवाज़ उठाने की एक नई प्रेरणा भी मिलती है। हिरोशिमा की कहानी है ही इतनी दर्द भरी। कोनो फुमियो ने इस दर्द और बच्चों पर हुए युद्ध के भयानक असर पर एक बहुत ही संवेदनशील और मार्मिक माँगा बनाई है। फुमियो का कहना है कि “जिस विश्व में जापान और हिरोशिमा स्थित है, उसी विश्व में प्रेम करने वाले सभी पाठकों के लिए” यह माँगा मैंने लिखी है। वे माँगा की शुरुआत में ही हम से उन घटनाओं के प्रति ज़िम्मेदारी लेने का आग्रह करती हैं जो हमारे विश्व में घट रही हैं।

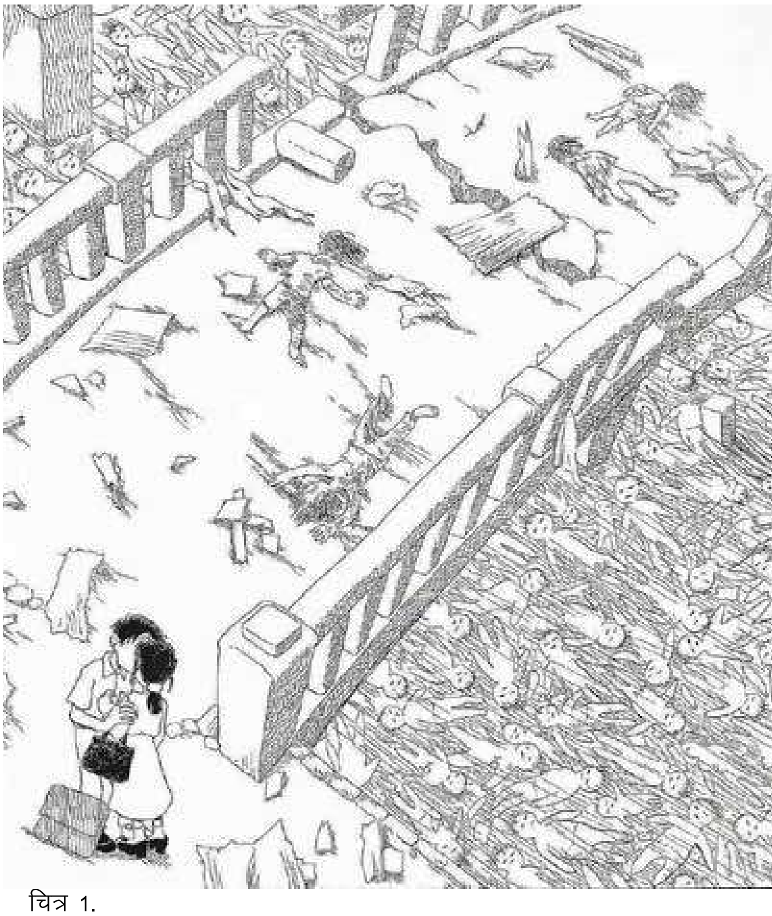

चित्र 1.

कथानक

मिनामी ने अपने पिता और छोटी बहन मिदोरी को अमरीका द्वारा हिरोशिमा पर 6 अगस्त 1945 को गिराए परमाणु बम के कारण हमेशा के लिए खो दिया। उसकी माँ, भाई, बहन और वह खुद किसी तरह उस समय बच गए। मगर उन पर परमाणु बम के ज़हरीले असर के कारण जल्द ही मिनामी की बहन कासुमि भी चल बसी। उसके छोटे भाई आसाहि को बुआ के पास रहने भेज दिया गया था। फिर पाँच साल बाद जब उसे वापस लेने गए तो उसने आने से इन्कार कर दिया। वह बुआ को ही अपनी माँ समझने लगा था तो उसे उन्हीं के पास छोड़ना ठीक समझा गया। अब मिनामी और उसकी माँ एक बस्ती में रहते हैं। माँ सिलाई करके कुछ कमा लेती हैं और मिनामी ऑफिस में क्लर्क का काम करती है।

यादों का बोझ और वर्तमान का सामना

हिरोशिमा पर बम गिराए जाने के दस साल बाद भी मिनामी अपने पिता और अपनी बहनों को नहीं भुला पा रही है। उसे बार-बार वे खौफनाक यादें घेर लेती हैं। वह ऑफिस से घर लौटते वक्त दो बहनों को साथ खेलते देखती है और उसे अपनी बहनें याद आ जाती हैं। स्नानागार में जब वह शहर की अन्य औरतों को रोज़मर्रा की बातें करते सुनती है और उनके शरीर पर परमाणु विकिरण से जलने के निशान देखती है तो उसे ताज्जुब होता है कि,

“कोई उस दिन की बात नहीं करता।”

ऑफिस का एक लड़का उचिकोषी उसे चाहता है। पर जब वह मिनामी को यह बताता है और अपनी चाहत जताता है तो मिनामी को फिर से उस दिन की यादें और दहशत घेर लेती हैं – लाशों से भरी वह नदी, जलते मलबे में फँसे लोग, जलती चमड़ी की बू, दीवार के नीचे दबा हुआ उसका सहपाठी जिसकी वह मदद नहीं कर पाई। इन सबका खयाल आते ही वह उचिकोषी को धक्का देकर दूर करते हुए चिल्लाती है,

“माफ करना, उस दुनिया में नहीं रह सकती!” (चित्र 1)

कोनो फुमियो इस वाकए को कॉमिक पैनल्स में कुछ निराले प्रयोगों और तब्दीलियों के ज़रिए बड़े भावुक ढंग से पेश करती हैं। जैसे ही मिनामी उचिकोषी को दूर धकेलकर भागती है, कुछ ही कदम भागने के बाद वह गिर पड़ती है। गिरने पर 6 अगस्त की यादें उसे जकड़ लेती हैं। ये खौफनाक यादें उसे पैरों से सिर

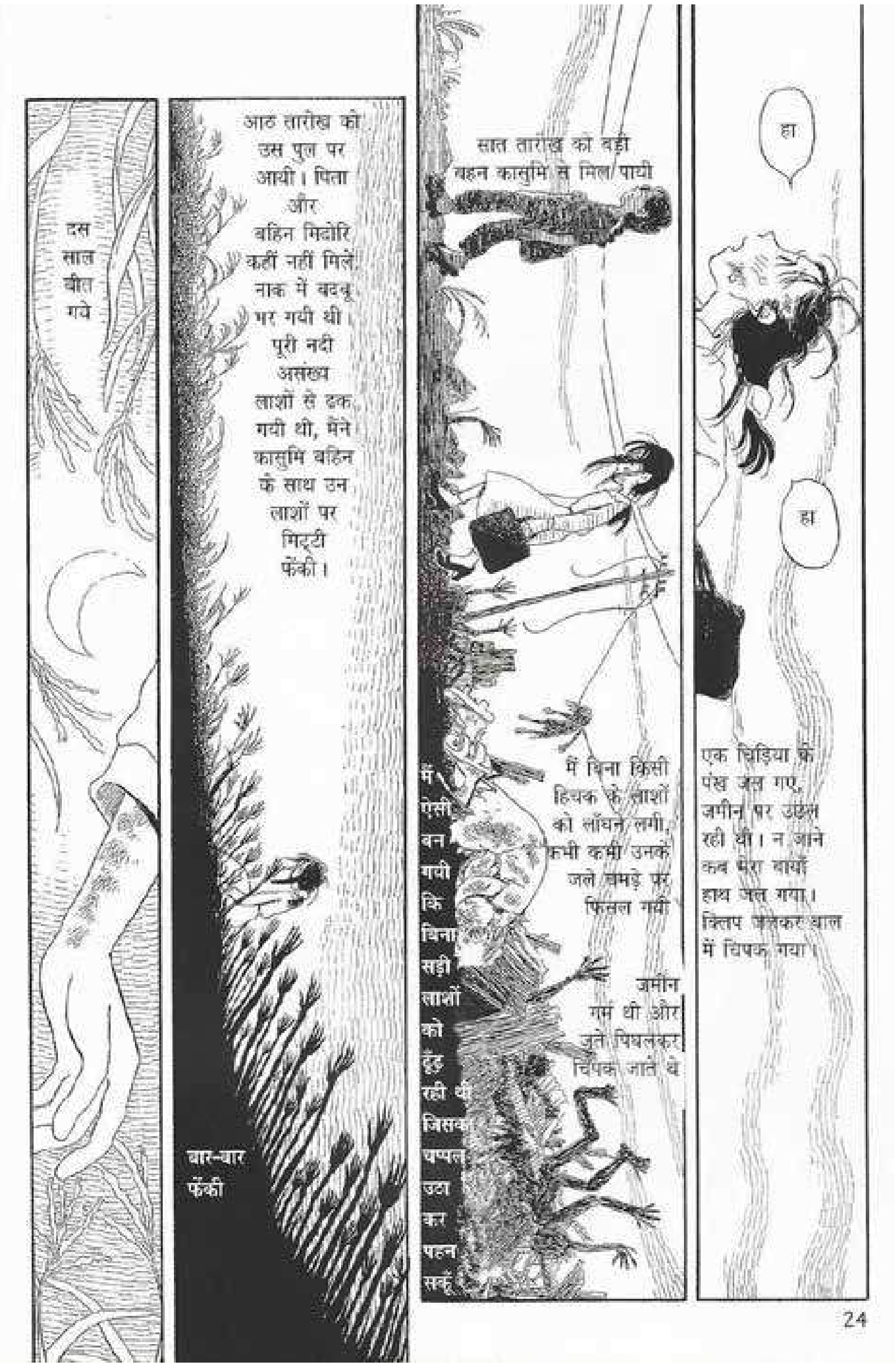

चित्र 2.

तक अपनी चपेट में ले लेती हैं। इस दहशत को दर्शाने के लिए फुमियो कॉमिक्स के कॉमिक्स पैनल को अकस्मात ही 90 डिग्री पर खड़ा कर देती हैं (चित्र 2)। अब हमें मिनामी गुरुत्वाकर्षण (ग्रेविटी) के खिलाफ ऊपर की ओर भागने की कोशिश करते दिखती है। एक असम्भव कोशिश जो उसे पूरी तरह थकाकर ध्वस्त कर देती है। पाठक भी उसे देखने के लिए या तो गर्दन या फिर किताब को 90 डिग्री मोड़ने पर मजबूर हो जाते हैं। और इसके बाद हम अचानक फिर से पैनल को सामान्य स्थिति और 180 डिग्री पर मुड़ा यानी आड़ी स्थिति में देखते हैं। मिनामी घास और कीचड़ में लिपटी गिरी पड़ी है और कह रही है,

"जब भी मुझे सुख और सौन्दर्य का एहसास होता है, अपने प्रिय शहर और प्रियजनों की याद आती है। तब कोई मुझे जबरन उसी दिन की दुनिया में ले जाता है, जिस दिन मेरा सब कुछ खो गया था। कोई मुझे बताता है कि तुम इस दुनिया में नहीं रह सकतीं।"

मिनामी का मन ग्लानि से भरा है। परमाणु बम की विनाशकारी शक्ति के सामने वह कुछ नहीं कर सकती थी। पर फिर भी उसे लगता है कि वह अपने परिवार को नहीं बचा पाई और इसलिए अब वह किसी खुशी या प्यार के लायक नहीं। वह उचिकोषी के प्यार को चाहकर भी नहीं अपना सकती। 6 अगस्त के दिन मिनामी की माँ ने कुछ नहीं देखा क्योंकि उनकी आँखें रेडिएशन से सूजकर बन्द हो गई थीं। पर छोटी मिनामी ने सब कुछ देखा। वह उस दिन को चाहकर भी नहीं भुला पा रही।

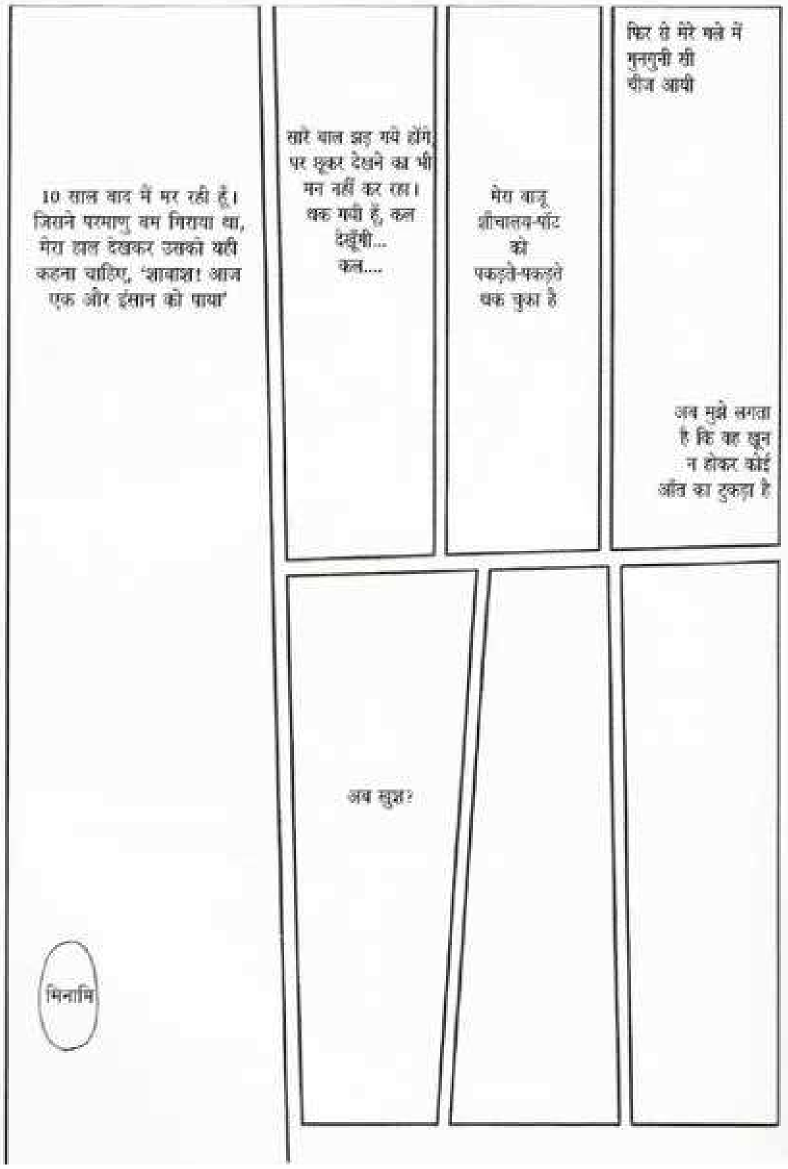

चित्र 3.

युद्ध का दीर्घकालीन असर

अखबार या फिर समाचार हमें ये ज़रूर बताते हैं कि युद्ध में इतने सैनिक मारे गए, इतने आम लोग मारे गए, इस देश ने इतने हथियार खरीदे, यह दूसरा देश उससे भी ज़्यादा और ताकतवर हथियारों से लेस है और किस देश की जीतने की सम्भावना है वगैरह-वगैरह। पर दुनिया भर में आज तक जितने भी युद्ध हुए हैं, उनका हमारे मन-मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ा है, इस पर कम ही बात होती है।

चित्र 4.

हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराए परमाणु बम के कारण उसी समय तो अनगिनत लोग मारे ही गए। पर बाद में भी जापान की कई पीढ़ियों को शारीरिक और मानसिक दिक्कतों का सामना करना पड़ा। माँगा के अन्त में मिनामी खुद बीमार पड़ जाती है। हादसे के दस साल बाद रेडिएशन का असर उस पर भी हावी हो रहा है। उसकी हालत बिगड़ती जाती है और वह आँखों की रौशनी भी खो देती है। चूँकि हम यह कहानी उसकी जुबानी सुन रहे हैं। इसलिए अब माँगा के पैनल्स में हमें केवल मिनामी के विचार दिखते हैं। पैनल की बाकी जगह खाली है (चित्र 3)। हमें भी मिनामी की तरह उसके आसपास के लोग और चीज़ें दिखनी बन्द हो जाती हैं। कोनो फुमियो हमें इस तरह मिनामी की खोई हुई दृष्टि और उसके अकेलेपन और मायूसी का एहसास दिलाती हैं। मिनामी सोच रही है,

“10 साल बाद मैं मर रही हूँ। जिसने परमाणु बम गिराया था, मेरा हाल देखकर उसको यही कहना चाहिए, ‘शाबाश ! आज एक और इन्सान को पाया।’”

हवा चलने लगी है और यूनागि (शाम की नीरवता) पूरा हो गया है। उचिकोषी अकेला और मायूस बैठा है। लेकिन यह कहानी अभी खतम नहीं हुई है। अगले पैनल में हवा एक पोस्टर उड़ाए ले जा रही है। पोस्टर पर लिखा है – ‘परमाणु निरस्त्रीकरण विश्व सम्मलेन, हिरोशिमा और विश्व शान्ति की शक्ति’। फिर हमें मिनामी का हाथ दिखता है। उसके हाथ में वह रुमाल है जो उसे उचिकोषी ने दिया था (चित्र 4)।

“चाहे कितनी बार यूनागि पूरा हो जाए, यह कहानी पूरी नहीं होती।”

अगर तुम्हें युद्ध पर सवाल उठातीं और भी माँगा पढ़नी हैं तो कोनो फुमियो ने *नीरव संध्या का शहर* के बाद *साकुरा का देश* भी लिखी है। यह माँगा इसी कहानी को आगे ले जाती है। इस सन्दर्भ में केयजी नाकाज़वा की ‘बेयरफुट जेन’ माँगा सीरीज़ ज़रूर पढ़ना। इस विषय पर कुछ जापानी एनिमे (फिल्म) भी बनी हैं, जैसे इसाओ ताकाहाता की *ग्रेव ऑफ फायर फ्लाइज़*। फिलहाल हम ऐसे माहौल में जी रहे हैं, जहाँ फिर से विश्व स्तर पर युद्ध छिड़े हुए हैं। ये किताबें और फिल्में हमें इन मसलों पर विचार साझा करने और विश्व शान्ति के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी की फिर से याद दिलाने में मदद कर सकती हैं।